विश्व समभाव दिवस

7 सितम्बर, 2014

अनुक्रमणिका

क्रम	संकलन संख्या	पृष्ठ संख्या
1	निमन्त्रण-पत्र	1
2	विश्व समभाव दिवस	5
3	मन पर विजय	11
4	खुद को जानें व्यक्ति, व्यक्तित्व, गुण, धर्म	12
5	मानव जाति में मानवता का पतन	19
6	अंतःकरण की संतुलित व असंतुलित अवस्था का परिणाम	22
7	नाटक	30
8	सजन-भाव की पढ़ाई व गुढ़ाई	37
9	समभाव समदृष्टि की युक्ति प्रवान करें	42
10	समभाव दिवस के शुभ अवसर संदेश	44
11	समाचार पत्रों मे विश्व समभाव दिवस	53

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

'निमन्त्रण-पत्र'

पत्र संख्याः ट्रस्ट/07 सि./21 दिनाँकः 25 अगस्त, 2014

विषय - आत्मसुधार के लिए आत्म-निरीक्षण व आत्मनियन्त्रण द्वारा श्रेष्ठ व्यक्ति बनने एवं वैश्विक स्तर पर चारित्रिक नव-निर्माण हेतु सुझावों व सहयोग के सम्बन्ध में।

सम्माननीय सज्जन जी,

हम वैश्विक स्तर पर सम्पूर्ण मानव जाति को बताना चाहते हैं कि कुदरत के आदेशानुसार सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा 'विश्व समभाव दिवस' के रूप में दिनाँक 7 सितम्बर 2014 को सार्वजनिक हित हेतु एक ऐसे अभियान का शुभारम्भ किया जा रहा है जिसका उद्देश्य है आत्म-निरीक्षण द्वारा हर मानव को अपनी-अपनी विकार वृत्तियों से परिचित कराना और इस तरह आत्मसुधार हेतु उन सबके अन्दर अब तक अपनाए नकारात्मक भाव-स्वभावों से उबरने की अभिलाषा उत्पन्न कर आवश्यक पराक्रम दिखाने की योग्यता प्रदान करना।

तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मानव को उस दिन उसकी शारीरिक व मानसिक अस्वस्थता के कारणों से अवगत करा पुनः अपने यथार्थ स्वरूप की महानता को जानने-समझने व तद्नुसार ढलने के लिए प्रेरित किया जाएगा ताकि वह अन्तर्निहित मनुष्यता रूपी गुण का अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा धर्म-संगत प्रदर्शन करते हुए अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व द्वारा अन्य सभी के लिए एक सदाचारी इंसान के रूप में ढल आदर्श कीर्तिमान स्थापित करने में सक्षम हो सके। निःसंदेह यह होगा एक अच्छे व नेक इन्सान की तरह जीवनयापन करने में समर्थ हो जाना।

निश्चित ही आप भी हमसे अवश्य सहमत होंगे और जनहित के इस कार्य को सहर्ष निजी कर्त्तव्य मानकर उसे पूर्णरूपेण सिद्ध करने में गर्व अनुभव कर सकेंगे और इस हेतु यथाशक्ति अपने अमूल्य समय का योगदान देना उचित समझेंगे। यह होगा सबकी अर्थात् खुद अपनी, अपने परिवारजनों की, अपने सभी प्रशंसकों व समर्थकों की भलाई यानि नैतिक उन्नति के निमित्त निष्कामता पूर्वक उन्हें आज की नैतिक पतन अवस्था से उबारना।

इस संदर्भ में हम यह बताना चाहते हैं कि इस सार्वजनिक उद्देश्य की निष्कामतापूर्वक पूर्ति करने पर न केवल सम्पूर्ण मानव-जाति अपितु भारत माता भी आपकी आभारी रहेगी। आप स्वीकारेंगे कि कुदरत की श्रेष्ठ कृति मानव के हृदय में वर्तमान समय में अज्ञानता व अलगाववाद के प्रभाव से जो परस्पर द्वि-द्वेष, घृणा, वैर-विरोध, तेरी-मेरी आदि जैसे नकारात्मक भाव घर कर चुके हैं उस कारण अधिकतर मानव सदाचारिता की राह से भटक एक मन्द-अधम इन्सान की तरह दुराचारिता व भ्रष्टाचारिता के मार्ग पर चलते हुए अनिष्ट व पाप-कर्म तक करने से नहीं सकुचाते।

यही कारण है कि आज भारत माता ऐसे अत्याचारियों के घृणित पाप कर्मों के बोझ तले दब आत्मरक्षा हेतु पुकार-पुकार कर आप जैसे सुपुत्रों से विनती कर रही है। उसकी व्यथा पर ध्यान दो और आत्मज्ञान के विधिवत् प्रसार द्वारा उसके बिगड़े हुए कुपुत्रों को पुनः सुपुत्र बनाने हेतु परिपूर्ण व्यवस्था कायम करो। इस तरह जगत जननी भारत माता को और अधिक आहत होने से बचाकर पुनः हर्षित कर दो ताकि वह पुनः अपनी आद् सम्मानित अवस्था को प्राप्त कर इस सत्य की घोषणा कर सके कि अब काल-चक्र कलियुग से सतयुग में प्रवेश कर रहा है।

याद रखो यह महान पराक्रम है और आप के अन्दर इस महान कार्य में साथ देने की क्षमता भी है और साधन भी हैं। निश्चित ही यदि हम सब मिलकर इस जनहित के कार्य को सिद्धकर भारत माता को पुनः हर्षवन्द करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं तो हम दावे से कह सकते हैं कि इस यत्न द्वारा हर मानव अपने निजी मूल गुण का बोध कर उसे निज धर्म के रूप में स्वीकारता हुआ जाति-पाति, साम्प्रदायिकता और भिन्न-भिन्न प्रकार के मानव निर्मित धर्मों के प्रभावों से स्वयं को स्वतन्त्र रखने की हिम्मत जुटा पाएगा। इस तरह वह कठिन से कठिन परिस्थिति में भी बाह्य प्रभावों के कारण किसी कुप्रथा व कुरीति का शिकार हो निज मानव-धर्म नहीं हारेगा और मानव-धर्म पर स्थिर रहने हेतु अपने तन-मन-धन का त्याग करने का पुरुषार्थ दिखा पायेगा।

आप स्वीकारेंगे कि ऐसा होने पर ही प्रत्येक मानव के ह्रदय व बुद्धि में निज सत्य स्वरूप प्रकाशित हो उठेगा और वह उस सत्य स्वरूप का बोध कर सन्तोष और धैर्य जैसे महान ईश्वरीय गुणों की ताकत के बल पर निज धर्म को सहजता व सत्यनिष्ठा से अपने जीवन में उतारने के योग्य बन जाएगा। इस तरह वह समबुद्ध अपने ह्रदय स्थित 'सतवस्तु' का पारखी बन विश्राम अवस्था को प्राप्त होगा। आप मानेंगे कि यह ही एकमात्र उपाय है भारत को एक सूत्र में बाँध कर सभी को श्रेष्ठ भारत का दर्शन कराने का और इस तरह प्रत्येक मानव के जीवन में खुशी व आनन्द के रूप में पुनः अच्छे दिनों को लाने का।

जैसा कि विदित ही है कि ईश्वरीय आदेश को मानने वाला व्यक्ति ही एक अच्छा व श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाने के काबिल होता है अतः इस कार्य को व्यक्तिगत आग्रह न मानकर ईश्वरीय आदेश मानते हुए इसका तह-ए-दिल से सम्मान कीजिए। उठिए, जागिए और इस जनहित के कार्य को निष्काम भाव से आगे बढ़ाने के लिए जो कुछ भी करना पड़े वह सब करने के लिए अपने सहयोगियों व प्रशंसकों सहित तत्पर हो जाइए। घबराइए नहीं, कतराइए नहीं, अपितु आत्मविश्वासी बन इस कार्य सिद्धि के लिए उद्देश्यपूर्ण उत्कंठा के साथ संगठित रूप से प्रयत्नशील होने का साहस दिखाइए। याद रहे परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो, आप द्वारा निस्वार्थ भाव से किए जाने वाले प्रयत्नों के फलस्वरूप जन-जन के ह्रदय में सदाचार के मार्ग पर अग्रसर होने की बलवती भावना जाग्रत होगी और उस भावना के वशीभूत होकर प्रत्येक इंसान अपने कलियुगी स्वभावों पर फ़तह पाने के योग्य बन सकेगा।

इस तरह विनाश की कगार पर खड़ा आज का मानव उत्थान पथ पर प्रशस्त हो न केवल अपना उद्धार करने का सामर्थ्य जुटा पाएगा अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करने में सक्षम हो जाएगा जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति परस्पर सजन भाव द्वारा

मानवीय सद्गुणों का भरपूर प्रयोग करते हुए आत्मतुष्टि द्वारा सदा सम-अवस्था में सधा रह सकेगा। यह होगा शांति-शक्ति के वाहक बन कुल समाज को एकता, एक अवस्था के सूत्र में बाँध कुल विश्व में सर्वोच्च मानव धर्म की पताका फहराना। अंततः आइए वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टि गत एक मूकदर्शक बने रहने की अपेक्षा एक ज़िम्मेदार व समझदार व्यक्ति होने के नाते अपनी सम्पूर्ण आत्मशक्ति व प्रेरणा से श्रेष्ठ मानव के रूप में ढल जाने का पराक्रम दिखाएं।

इस संदर्भ में मानव जाति के सर्वांगीण विकास व नैतिक उत्थान के लिए फरीदाबाद में गाँव भूपानी स्थित, सतयुग दर्शन वसुन्धरा के परिसर में दिनाँक 26 जनवरी 2014 को समभाव-समदृष्टि का स्कूल खोला है। अपने आप में अनूठे विश्व के इस प्रथम समभाव-समदृष्टि के स्कूल से आत्मिक ज्ञान प्रदान करने का सिलसिला दिनाँक 08 अप्रैल 2014 से आरम्भ हो चुका है। इस विद्यालय में पढ़ाये जा रहे सबकों को इन्टरनेट के माध्यम से पढ़-सुन व समझ कर लाभ उठा सकते हैं व अन्य सजनों को भी इससे लाभ उठाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं ताकि सब एक अच्छे इंसान के रूप में ढल सकें।

इस संदर्भ में आगामी 7 सितम्बर 2014 को सतयुग दर्शन ट्रस्ट, वसुन्धरा, फ़रीदाबाद में दोपहर 2.00 से 5.00 बजे तक मनाए जाने वाले "विश्व समभाव दिवस" के अवसर पर आप की उपस्थिति प्रार्थनीय है। इस आयोजन में आप सपरिवार, अपने प्रशंसकों व समर्थकों सहित सादर आमन्त्रित हैं। सबकी जानकारी के लिए जो सजन किसी मजबूरी वश इस आयोजन में सम्मिलित न हो सके वे सतयुग दर्शन ट्रस्ट की वेबसाइट पर इसका सीधा प्रसारण वेबकास्ट के ज़रिए देख सकते हैं।

उपरोक्त अवसर पर ट्रस्ट द्वारा प्रसारित किया जाने वाला सन्देश आपके अवलोकनार्थ व सन्दर्भ हेतु संलग्न है। आपसे प्रार्थना है कि इस सन्देश को अपने सम्पर्क में आने वाले सभी सजनों तक अवश्य पहुँचाएं ताकि अधिक से अधिक सजन इस आयोजन का लाभ उठा आनंदमय जीवनयापन कर सकें।

इस सन्दर्भ में अधिक जानकारी मोबाइल नं. 9999722911 पर या ट्रस्ट की वेबसाइट www.satyugdarshantrust.org से भी प्राप्त की जा सकती है।

शुभ कामनाओं व सद्-भावनाओं सहित,
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
फ़रीदाबाद (हरियाणा)